भजन

तर्ज–छू लेने दो नाजुक होठों को

महबूब हमारे सामने है,लेकिन न उन्हें पहचान सके
आवाज सुरीली सुनते है,लेकिन न उन्हे हम जान सके

1–हमारी खातिर कई कष्ट सहे,वो बार बार समझाते है
सरदी भी सही गरमी भी सही,वो क्या क्या दुख उठाते हैं
अपने मन में सोचो तो जरा,क्या सच है उन्हे हम जान सके

2–इन झूठ फरेब के झगड़ो में,हम अपना आप गंवा बैठे
धनी की मेहरबानी देखो,वो फिर भी हमें अपना बेठे
ये जीव हमारा पत्थर है,हम कदर न उनकी जान सके

3–यह सुन्दरसाथ हमारा है,इस नाते को वो पाल रहे
हम गिरते पड़ते ‘‘साथ‘‘को,वह देके सहारा संभाल रहे
हम ऐसे दिल के वज्र बने,कुछ अपना आप ना वार सके